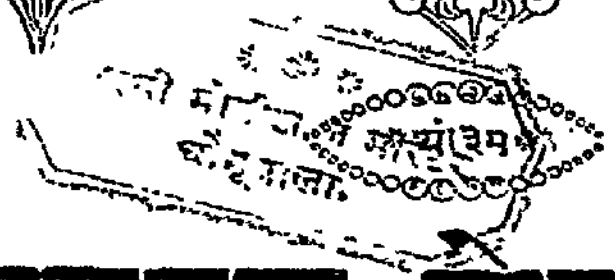

गुरुदत्त लेखावली

अर्थात्

मुनिवर

श्री पं० गुरुदत्तजी विद्यार्थी एम०ए०

के

लेखों का आर्य्यभाषानुवाद

जो

(आज तक आर्य्यभाषा में अप्रकाशित रहे हैं)

अनुवादक

पं० सन्तराम बी०ए०—पं० भगवद्दत्त बी०ए०

प्रकाशक

राजपाल—प्रबन्धकर्त्ता,

आर्य्यपुस्तकालय व सरस्वती आश्रम लाहौर ।

नवम्बर १९१८—मार्गशीर्ष १९७५.

दयानन्दाब्द ३९ ।

(*All Rights Reserved.*)

पंजाब प्रिंटिंग वर्क्स, लाहौर में पं० चरणदास बी. ए. के प्रबन्ध से टाइटल वा पृष्ठ २५७ से ३१६ तक छपा । शेष बाम्बे प्रेस लाहौर में छपा ।

मूल्य २)

नियोग पर ।

टी० विलियम्स महाशय का पं० गुरुदत्त के नाम पत्र ।

सन् १८८४ ईसवी की छपी हुई सत्यार्थप्रकाश के पृष्ठ ११८ पर दयानन्द यह प्रश्न उठाते हैं कि क्या "नियोग पति के जीते जी और मरने के उपरान्त दोनों अवस्थाओं में होता है?" इस प्रश्न का वे स्वयम् यह उत्तर देते हैं—"हां, नियोग पति के जीते जी भी होता है।" यह हमें मालूम ही है कि नियोग से दयानन्द का क्या अभिप्राय है। नियोग यह है कि जब दम्पति (स्त्री और पुरुष) के कोई सन्तान न हो तो उन में से वह जो क्लीव नहीं सन्तान की इच्छा से किसी दूसरे स्त्री या पुरुष के साथ सम्भोग कर सकता या कर सकती है।

इस समुल्लास के पहले भाग में वे बताते हैं कि पत्नि को पति के मरजाने पर क्या करना चाहिए। इससे आगे चलकर जहां वे यह दिखलाते हैं कि जीवित परन्तु नपुंसक पति की अवस्था में पत्नि को क्या करना चाहिए, वे इस विस्मयोत्पादक सिद्धान्त की नींव रखते हैं कि सन्तानहीन मनुष्य की स्त्री, पति के जाते जी ही, सन्तान प्राप्ति के लिए किसी दूसरे विवाहित पुरुष से सम्भोग कर सकती है। यह देखकर आश्चर्य होता है कि अपने इस अद्भुत सिद्धान्त की पुष्टि में वे पहले की तरह मनु नहीं, परन्तु ऋग्वेद के दसवें मण्डल की दसवीं ऋचा का भाग उद्धृत करते हैं। उनके पास उपस्थित करने के लिए सब से बड़ा और एक मात्र प्रमाण यही है।

मेरा अभिप्राय यह नहीं कि ऋग्वेद में ऐसी अश्लीलता नहीं, क्योंकि मैं दिखला सकता हूँ कि उसमें है, परन्तु यह दिखलाना आर्यसमाज के प्रवर्तक दयानन्द के लिए रह गया था कि ऋग्वेद वस्तुतः ऐसी अत्यन्त दुराचार की शिक्षा देता है कि यदि किसी स्त्री का पति नपुंसक हो तो वह किसी दूसरे विवाहित पुरुष के पास सम्भोग के लिए चली जाये। मेरा यह भी मतलब नहीं कि हिन्दुओं ने इस सिद्धान्त को पहली बार दयानन्दियों से ही सुना है, क्योंकि यह बात प्रसिद्ध है कि हिन्दू इस के अनुसार शताब्दियों तक कर्म करते रहे हैं। प्रयाग में पण्डे ब्राह्मणों से यही काम लिया जाता है; इसी प्रकार के काम ने वल्लभाचार्य सम्प्रदाय के

महाजनों को बदनाम किया है; और इसी ने जैनियों के विवाह कर्म को जगत् में निन्दित प्रसिद्ध कर दिया है। परन्तु जो कुछ मैं कहना चाहता हूँ वह यह है कि मेरे पास यह ख्याल करने के लिए कारण हैं कि हिन्दुओं के इतिहास में यह पहला ही समय है, जब कि यह विकट सिद्धान्त ऋग्वेद के गले मढ़ा गया है, और इस प्रकार गले मढ़ने की अस्पृहणीय प्रतिष्ठा आर्यसमाज के प्रवर्तक दयानन्द को प्राप्त है।

पर महाशय! जब हमें यह पता लगता है कि यह सब झूठ है तो इस-प्रतिष्ठा की अस्पृहणीयता सहस्रों गुना प्रबल हो जाती है। हां महाशय! यह कहना कि ऋग्वेद ऐसी शिक्षा देता है बड़ा भारी झूठ है। ऋग्वेद को कुत्सित रीति से झूठा बनाने के ऐसे उदाहरण के पश्चात् दयानन्द के विषय में कोई क्या ख्याल कर सकता है, विशेषतः जब कि वह इसकी पूजा ईश्वरीय ज्ञान की पुस्तक की भांति करते हुए भी उसे ऐसी निर्दयता से कीचड़ में घसीटता है।

महाशय! क्या आपको विदित नहीं कि ऋग्वेद, मंडल १०, सूक्त १०, मंत्र १० का जो भाग दयानन्द उद्धृत करता है उसमें बोलने वाला भाई है और वह स्त्री जिससे वह बात करता है उसकी बहन है!!! बोलने वाला यम है और वह स्त्री जिससे वह बात करता है यमी उसकी बहिन है—वह उसकी केवल बहिन ही नहीं किन्तु उसकी जौड़िया बहिन है।

क्या आश्चर्य्य है कि अब तक कोई हिन्दू ऐसा पागल नहीं हुआ कि ऐसी शिक्षा को ऋग्वेद के सिर मढ़ता, क्योंकि प्रत्येक हिन्दू जिसने कभी वेद का दर्शन मात्र भी किया था जानता था कि बोलने वाला यम है और वह अपनी जौड़िया बहिन यमी से बात करता है। दयानन्द इसका इस प्रकार अनुवाद करते हैं कि बोलने वाला पति है और जिस स्त्री से वह बात करता है वह उसकी पत्नि है। अब यहां वे जान बूझकर झूँठ बोलते हैं। मैं पूर्ण निश्चय से कहता हूँ कि दयानन्द जानते थे कि बोलने वाला यम है और वह अपनी जौड़िया बहिन यमी से बात करता है। अतएव वे कितने भीषण असत्य के अपराधी हैं!!!—भीषण इसलिए कि वे ऐसी पुस्तक के विरुद्ध जान बूझकर झूठ कहते हैं जिसको कि वे ईश्वरीय ज्ञान मानते और जिसके ईश्वरीय ज्ञान होने की घोषणा करते हैं।

दयानन्दियों के लिए इस गर्ह्य दोषारोप से बचने का केवल एक ही उपाय है, और वह यह कि वे यह दिखलादें कि बोलने वाला यम नहीं, और जिस स्त्री से वह बात करता है वह उसकी जौड़िया बहिन यमी नहीं। पर ऐसा निषेध कैसा निःसार होगा यह मैं निश्चयपूर्वक सिद्ध करूंगा। क्योंकि—

(१) स्वयं मंत्र को छोड़कर, उपस्थित करने के योग्य सब से प्राचीन प्रमाण यास्क है। वह निरुक्त ६, ५, ५ में इसी सूक्त के १३वें मंत्र पर अपनी टिप्पणी को उद्धृत कर कहता है—"यमी यम से कहती है" कदाचित्। शायद कोई यह न कहदे कि ग्रन्थकार पर अपने टीकाकारों के कथन का बंधन नहीं हो सकता, अतएव मैं यास्क के अपने ही शब्द देता हूँ। निरुक्त ११, ३, १३ में ऋग्वेद १०, १० के चौदहवें मंत्र की व्याख्या करते हुए वह स्वयम् कहता है—"यमी यम चकमेतां प्रत्याचचक्ष।" इसका अर्थ यह है कि यमी ने यम से भोग करना चाहा पर यम ने इनकार कर दिया। अब यह निश्चय ही काफ़ी स्पष्ट है, क्योंकि यह प्रत्यक्ष है कि यास्क और उसका टीकाकार जिन मन्त्रों को उद्धृत करते हैं उन्हें वे यम और यमी के कथोपकथन का एक भाग समझते हैं, जिसमें कि यमी यम के साथ सम्भोग करना चाहती है पर यम इनसे इनकार करता है। भला इसका एक क्लीव पति के अपनी स्त्री को किसी दूसरे विवाहित पुरुष के पास सम्भोग के लिए जाने की आज्ञा देने के साथ क्या सम्बन्ध है !!! यास्क का टीकाकार स्पष्ट शब्दों में कहता है कि यम यमी का भाई था। महाशय, आपको यह स्मरण दिलाने का प्रयोजन नहीं कि यास्क का यह निरुक्त एक वेदांग है, इसलिए पूर्ण वैदिक प्रमाण है। दयानन्द उस यास्क के विरुद्ध, जिसके विषय में कि वह स्वीकार करता है कि मैं उसका पूर्ण आदर करता हूँ, चलने और यह कहने की कि यहां क्लीव पति का प्रसंग है, कैसे धृष्टता करता है !!

(२) मेरा दूसरा प्रमाण भी किसी तरह यास्क से कम नहीं। यह कात्यायन है। उसकी ऋग्वेद की सर्वानुक्रमणिका जिसमें उसने उस वेद के प्रत्येक मंत्र का ऋषि और देवता आदि दिए हैं इन बातों में एक बड़ा प्रमाण है और सब उसे आदर की दृष्टि से देखते हैं। कात्यायन भी यजुर्वेद के शतपथ ब्राह्मण के श्रौत सूत्रों का रचयिता है, और वैयाकरण की दृष्टि से भी पाणिनि और महाभाष्यकार पतञ्जलि (जो कि प्रधानतः पाणिनीय व्याकरण पर कात्यायन की वार्तिकाओं की व्याख्या में ही प्रवृत्त है) से भी दूसरे दर्जे पर नहीं। अतएव ऐसे सब विषयों में जिन पर कि हम यहां विचार कर रहे हैं कात्यायन के अनिवार्य प्रमाण होने में कोई सन्देह नहीं हो सकता। अब वह अपनी सर्वानुक्रमणिका में कहता है कि ऋग्वेद १०, १०, का कोई ऋषि या सवत नहीं, क्योंकि वह कहता है कि यह सूक्त वैवस्वत के पुत्र यम और पुत्री यमी के बीच कथोपकथन है। उसके शब्द ये हैं—वैवस्वतयो—र्यमयम्योः सम्वादः। अब महाशय, खुद इस मंत्र को छोड़कर भी, किसी तरह से भी इन दोनों के समान प्रमाण और कोई प्रबल मिलना असम्भव है। परन्तु अब मैं स्वयम् सूक्त की ओर आता हूँ।

(३) (क) यम और यमी का नाम सूक्त में छः बार आया है, और तीन बार प्रत्येक का नाम विशेष संज्ञा के तौर पर है। १३ वें मंत्र में यम सम्बोधन विभक्ति में "हे यम"! है, और १४ वें मंत्र में यमी उसी विभक्ति में "हे यमी"! है। ये दो अन्तिम मंत्र हैं। शतपथ बतलाता है कि सम्बोधन विभक्ति के सिवा और किसी प्रकार भी वाक्य की रचना सम्भव नहीं। इस लिए यह सँलापकों के नाम को प्रकट करता है।

(ख) अब दूसरी बात रही उनके सम्बंध की। दूसरे मंत्र में यम यमी को अपने गोत्र की स्त्री, "सलक्ष्मा", कहता है। आगे चलकर चौथे मंत्र में यम कहता है कि हमारा (यम और यमी का) मूल—"नाभिः"—गंधर्व और उसकी जल-स्त्री है, और हमारा सम्बंध सगोत्रता का—"जामि"—है। पांचवें मंत्र में यमी कहती है कि त्वष्टृ ने हमें गर्भमें पति और पत्नि—दम्पती—बनाया है। वह यहां पर यह दिखलाती है कि वे यमज (जौड़िये) उत्पन्न किए गए थे, और इस से वह यह परिणाम निकालती है कि उन्हें पति और पत्नि बनना चाहिए। फिर नवें मंत्र में वह उसी प्रकार युक्ति देती है कि आकाश और पृथ्वी पर जोड़े—"मिथुना"—अर्थात् यमज परस्पर जुड़े हुए—"सबन्धू"—हैं, और उसी मंत्र में वह कहती है कि मैं यम के साथ सगोत्रों का सा बर्ताव नहीं करना चाहती। दसवें मंत्र में यमी कहती है कि आज से लहू के नातेदार—जामयः—वह काम करेंगे जो उन के शोणित-सम्बंध—अजामि—के लिए अनुचित है। ग्यारहवें मंत्र में वह शिकायत करती है कि यम भाई—भ्राता—होकर भी उसकी सहायता नहीं करता, और यद्यपि वह उसकी बहिन—स्वसा—है फिर भी वह उस पर विपत्ति आने देता है। बारहवें मंत्र में यम यमी के साथ सम्भोग करने से इनकार करता है क्योंकि वह कहता है कि जो पुरुष अपनी बहिन—स्वसा—के साथ सम्भोग—निगच्छात्—करता है लोग उसे पापी कहते हैं। उसी मंत्र के अन्त में वह कहता है—हे प्यारी, तेरा भाई इसका अधिकारी नहीं—"न ते भ्राता, सुभगे, वष्ट्येतत्"। अथर्व वेद में यह सूक्त वर्ण कर दिया गया है। वहां यम का इनकार भी निश्चित और गम्भीर शब्दों में मिलता है।

यदि महाशय, अब इतने पर भी कोई मनुष्य यम और यमी के सम्बंध पर विवाद करे तो उसे सिवाय पागल के और क्या कहा जा सकता है।

बस अब मैंने दिखला दिया है कि इस कथोपकथन में बातें करने वाले जौड़िये भाई और बहिन हैं। बहिन यमी की यह उत्कट कामना है कि उसका भाई यम उसके साथ सम्भोग करे। भाई यम ऐसा करने में पाप बताता है और दृढ़ता पूर्वक उसे

इनकार करता है, परन्तु साथ ही उसे किसी दूसरे पुरुष की कामना करने और उसे आलिंगन करने को कहता है। जिस दसवें मंत्र का प्रमाण दयानन्द देते हैं उसमें ठीक यही बात है, परन्तु वे उसका असत्य अनुवाद करके यह दिखाते हैं कि यदि किसी स्त्री का पति अशक्त हो तो वह सन्तान की प्राप्ति के लिये किसी दूसरे विवाहित पुरुष से भोग कर सकती है !!! दयानन्द के योग्य शिष्य, गुरुदत्त, अपने गुरु को "अपने समय का वेदों का एक ही पंडित" बताते हैं। लेकिन दयानन्द को जान बूझ कर वेदों को झुठलाने और ऋग्वेद के सिर एक ऐसा अत्यत अश्लील सिद्धान्त मढ़ने (जिस की कि उस वेद में गंध तक नहीं) का अपराधी सिद्ध करने के बाद मैं यह कहने के लिए सर्वथा उद्यत हूँ कि निस्सन्देह दयानन्द अपने समय में वेदों का सब से भयानक शत्रु था।

नियोग पर टी० विलियम्स साहब की दोषालोचना का उत्तर।

एक लेखक का कथन है कि "मनुष्य के आचरणों की जांच करने के लिए उस से उस ईश्वर के विषय में प्रश्न करो जिस में कि उसकी श्रद्धा है। यदि वह उसका उत्तर न्याय और सरलता से देगा तो वह उत्तर उसकी प्रकृति और आध्यात्मिक और मानसिक वृद्धि का प्रकाशन होगा।"

यह प्रतिज्ञा पूर्णतः सत्य है। मनुष्य और जातियों का सारा अनुभव इस की पुष्टि करता है, और ईसाइयों की बायबल भी इसका एक प्रमाण है। बायबल (उत्पत्ति पुस्तक, १, २६) कहती है कि "परमेश्वर ने मनुष्य को अपनी प्रतिमूर्ति बनाया है।" अतएव, मनुष्य, प्रतिमूर्ति होने के कारण, परमेश्वर के स्वभाव को प्रकट करता है, या मनुष्य (अपनी भावना में) ठीक वही है जो कुछ कि उसका परमेश्वर है। शायद यह कहना और भी ठीक होगा कि मनुष्य परमेश्वर को अपनी प्रतिमूर्ति के सदृश बनाता है। इस अवस्था में भी परमेश्वर उसके आचरण और मानसिक योग्यता का सच्चा दर्शक है। इस सचाई को अपना पथदर्शक मानकर हम चाहते हैं कि इस लेख में टी० विलियम्स महाशय के उस आचार और योग्यता की परीक्षा करें जिस से कि वे दयानन्द पर दोषारोपण करने का दम भरते हैं। क्योंकि जैसे यह एक नित्य सत्य है कि "जिस मनुष्य का सिर घूमता है वह यह समझता है कि सारी दुनिया घूम रही है," वैसे ही जो दोष टी० विलियम्स साहब दयानन्द पर लगाते हैं कहीं वे स्वयं उन में ही न हों। सच्ची बात तो यह है कि सौभाग्य से टी० विलियम्स महाशय ने ईसाई पक्षपात का चश्मा पहन रक्खा है, और उन्हें, पाण्डुरोग के रोगी की तरह, प्रत्येक वस्तु अपने चश्मे के रंग में ही रंगी हुई देख पड़ती है। टी० विलियम्स महाशय अपने लेख में दयानन्द पर ये दोष लगाते हैं:—

१. वे वेदों का अपर्याप्त आदर करते हैं।

२. वे नियोग के विस्मयोत्पादक, और अत्यन्त अश्लील सिद्धान्त का प्रचार करते हैं।

३. इस सिद्धान्त को ऋग्वेद के सिर मढ़ने की अस्पृहणीय प्रतिष्ठा उन्हें प्राप्त है।

४. वे झूठ, सफेद झूठ, जान बूझ कर झूठ, भयानक झूठ बोलते थे, और कुत्सित रीति से वेदों को झुठलाते हैं।

५. वे भौंदू थे।

६. वे अपने समय के वेदों के भयानक शत्रु थे। और अन्त को टी० विलियम्स साहब उस सच्चे ईसाई भाव के साथ जोकि उन्होंने ईसाई वक्ताओं से अपने अन्दर ग्रहण किया होगा दयानन्द और उसके मत को घृणा भरे शब्दों में याद करते हैं।

इस लेख में मैं 'प्रभु' (Lord) शब्द (जिन अर्थों में वह बायबल की पुरानी संहिता में प्रयुक्त हुआ है) और "खीष्ट" (Christ) में कोई भेद नहीं समझूँगा; क्योंकि पुरानी संहिता का "प्रभु" जेहोवा या जगदीश्वर है, परन्तु त्रिमूर्ति का जगद्विख्यात (अपनी सर्वश्रेष्ठ प्रांजलता के कारण) सिद्धान्त यह है कि पिता रूप परमेश्वर (जेहोवा), पुत्र रूप परमेश्वर (खीष्ट) और पवित्र आत्मा (प्रभु) सब एक ही हैं। इसलिए मैं पुरानी संहिता में "प्रभु" शब्द के स्थान में "खीष्ट" शब्द रखदूंगा जिससे इसे प्रिय, आधुनिक ईसाई वेष मिल जाये। अब मैं इस विषय पर फिर आता हूँ। मैं यह दिखलाऊंगा कि जो दोष टी० विलियम्स दयानन्द पर आरोपित करते हैं, यदि बायबल सच्ची है तो वे सब दोष खीष्ट (जेहोवा या प्रभु) में पाये जाते हैं।

टी० विलियम्स साहब दयानन्द पर पहले यह अभियोग लगाते हैं कि उनके हृदय में वेदों के लिए यथेष्ट आदर न था।

अब मैं पाल (पहली कोरन्तीलों अध्याय ७, आयत १२) का प्रमाण देता हूं। मैं औरों से बोलता हूं प्रभु से नहीं। फिर (दूसरी कोरन्तीलों अध्याय ११, आयत १७) "जो कुछ मैं कहता हूँ प्रभु की ओर से नहीं कहता। लेकिन अभिमान में आकर मूर्खता से कहता हूँ। यहां पर यह स्मरण रहना चाहिए कि पाल एक दैवज्ञान-प्राप्त श्रेष्ठजन है, और पाल के दैवज्ञान ने, जोकि खीष्ट के विचार हैं, उससे यह कहलाया है कि जिस चीज़ का उसे दैवज्ञान हुआ है (बायबल का एक भाग) वह परमेश्वर की ओर से नहीं परन्तु मूर्खता और अज्ञान से भरा है। इसलिए प्रभु या खीष्ट बायबल का अपर्याप्त आदर करने का दोषी है, क्योंकि वह कहता है कि बायबल ईश्वरीय ज्ञान नहीं।

दूसरे टी०विलियम्स साहब स्वामी दयानन्द को नियोग के विस्मयकारी और अत्यन्त अश्लील तथा विकट सिद्धान्त का प्रचार करने का दोषी ठहराते हैं। हम डियोट-रोनोमी (Deuteronomy) २५ : ५—१० का प्रमाण देते हैं—"यदि भाई इकट्ठे रहते

हों और उनमें से एक सन्तानहीन मर जाय, तो मृतक की स्त्री किसी अपरिचित से विवाह न करे, प्रत्युत उसका देवर उसके पास जाय, और उसे अपनी पत्नी बनाकर उसके साथ देवर का कर्तव्य पालन करे, और वह यह है कि पहली सन्तान जो उससे पैदा हो वह उसके मृत भाई का उत्तराधिकारी हो जिससे उसका नाम इसराईल में से मिट न जाय। और यदि वह मनुष्य अपने मृत भाई की पत्नि को ग्रहण करना पसन्द न करे तो वह स्त्री बड़ों के द्वार पर जाकर कहे—'मेरे पति का भाई अपने पति की पीढ़ी इसराईल में चलाने से इनकार करता है। वह मेरे साथ देवर के कर्तव्य को पूरा नहीं करता।' तब नगर के बड़े २ आदमी उसे बुलायें और उसे समझायें; और यदि वह न माने और कहे 'मैं उसे ग्रहण करना नहीं चाहता', तब उसके भाई की स्त्री बड़ों के सामने उसके पास आये और उसके पैर से उसका जूता निकाले, और उसके मुंह पर थूके, और उत्तर दे और कहे "उस मनुष्य के साथ जो अपने भाई के घर को बनाने से इनकार करता है यही सलूक होगा, और इसराईल जाति में उसका कुल उस मनुष्य का कुल कहलायगा जिसका जूता खोला गया है।" अब यदि यह साफ नियोग नहीं तो और क्या है? इस प्रकार ख्रीष्ट पर "नियोग के विस्मयकारी, अत्यन्त अश्लील और विकट सिद्धान्त" का प्रचार करने का दोषी ठहरता है।

तीसरे, और फलतः, ख्रीष्ट बायबल पर इस सिद्धान्त के थोपने की अस्पृहणीय प्रतिष्ठा रखने का दोषी ठहरता है।

चौथे, टी० विलियम्स महाशय दयानन्द पर झूठ बोलने, जान बूझकर झूठ बोलने, भीषण झूठ बोलने, और कुत्सित रीति से झुठलाने का दोष लगाते हैं'

अब राजाओं की पहली पुस्तक अध्याय २२, आयत २३ को देखिए। "और वहां एक प्रेत आया और प्रभु के सामने खड़ा हुआ, और कहने लगा कि मैं उसे फुसलाऊँगा। और प्रभु ने उससे कहा किस तरह? तब उसने उत्तर दिया कि मैं जाऊंगा और उसके सभी भविष्यद्वक्ताओं के मुख में झूठ बुलाने वाली आत्मा बनकर रहूंगा। तब प्रभु ने कहा कि तू उनको फुसला और उन्हें मना ले; जा और ऐसा कर। अतएव, अब देखो, प्रभु ने तेरे इन सब भविष्यद्वक्ताओं के मुंह में एक झूठी आत्मा रख दी है। और प्रभु ने तेरे विषय में बुरी बातें कही हैं।" फिर(2 Thes. 2–11) "इस कारण से परमेश्वर उन में ऐसा भारी भ्रम पैदा कर देगा कि वे झूठ में विश्वास करने लगेंगे।"

क्या यहां पर ईसाइयों का प्रभु अपने भविष्यद्वक्ताओं के मुख में झूठ डालने और "एक झूठ, एक अत्यन्त झूठ, जान बूझकर झूठ, एक भीषण झूठ, और एक

कुत्सित झूठ" के द्वारा लोगों को भ्रम में डालने का दोषी नहीं ठहरता?

पांचवें, टी० विलियम्स साहब स्वामी दयानन्द पर भौंदूपन (Idiocy) का दोष लगाते हैं। वेब्स्टर अपने कोश में भौंदूपन (Idiocy) को "बुद्धि का एक दोष" कहते हैं। यह दिखलाने के लिए कि यह दोष ख्रीष्ट या प्रभु में था हम उत्पत्ति की पुस्तक (१, ३०) की ओर आते हैं। वहां लिखा है—प्रभु ने अपनी बनाई हुई प्रत्येक वस्तु पर दृष्टि डाली, और देखा कि वह बहुत अच्छी है।" अब यहां प्रभु को अपनी बनाई हुई प्रत्येक वस्तु बहुत अच्छी मालूम हुई। फिर उसी पुस्तक के छटे अध्याय के छटे श्लोक में लिखा है "प्रभु को पश्चात्ताप हुआ कि उसने पृथ्वी पर मनुष्य को बनाया, और उसे हार्दिक शोक हुआ।" ऊपर के कथन से यह स्पष्ट है कि समय ने प्रमाणित कर दिया कि प्रभु की बुद्धि में दोष है क्योंकि उसने अपनी सृष्टि के बहुत अच्छी होने की भ्रांतिजनक आशा बांधी थी, पर इसके विपरीत वह उसके लिए पश्चात्ताप और शोक का कारण सिद्ध हुई। क्या यह सदोष बुद्धि, भौंदूपन नहीं? अतएव ख्रीष्ट या प्रभु उस भौंदूपन का दोषी है जिसका दोषी कि टी० विलियम्स साहब दयानन्द के ठहराने के लिए ऐसे व्यग्र हैं।

हमने दिखला दिया है कि ख्रीष्ट किस प्रकार बायबल के ईश्वरीय ज्ञान होने की घोषणा करता है, अतएव, वह अपने आपको अपनी बायबल का शत्रु विघोषित करता है। इसलिए टी० विलियम्स साहब को दयानन्द पर अपने समय का वेदों का भयानक शत्रु होने का दोष लगाते देखकर आश्चर्य नहीं होता।

और अन्ततः, टी० विलियम्स साहब सच्चे ईसाई भाव के साथ अपने धर्म-प्रचार के शस्त्र स्वामी दयानन्द पर चलाते हैं और उन्हें निन्दा का पात्र ठहराते हैं। यह भी पहले दोषों की तरह टी० विलियम्स साहब के प्रभु के असदृश नहीं। बायबल बताती है कि प्रभु या ख्रीष्ट एक व्यक्ति के पाप के बदले प्रत्येक युग और प्रत्येक देश में अपनी सारी सृष्टि को कोसता और दुःख और सन्ताप, दासत्व और मृत्यु का दण्ड देता है। बायबल कहती है कि प्रभु ने सब सांपों को एक सांप के कारण, जिसने कि हव्वा को प्रलोभन में फँसाया था, कोसा और उन्हें सब पशुओं से बढ़कर निन्दित बनाया, उन्हें पेट के बल चलने और मिट्टी खाने का दण्ड दिया, और मनुष्यों के हृदय में उनके लिए शत्रुता पैदा करदी। बायबल दिखलाती है कि प्रभु ने सब स्त्रियों को दण्डित किया, एक पुरुष के पाप के लिए पृथ्वी को शाप दिया, सब आने वाली पीढ़ियों को दुःख देने के लिए इसे कांटे और झाड़ियां पैदा करने पर शाप दिया; सारी मनुष्य-जाति को सब देशों और सब युगों में आजन्म शोक में भूमि को खाने, खेतों की बूटियां खाने, पसीना बहा कर रोटी खाने और अन्त को मिट्टी में ही मिल जाने का दण्ड दिया। कैसा व्याकुल कर देने वाला विचार है।

असंख्य प्राणी उन पापों के लिए जो उनके जन्म के भी पहले किए गए थे, निर्दय भाव से प्रति दिन की आशाशून्य विपत्ति में डाले जाएँ, मानों एक ईश्वर-निन्दा तो काफी ही न थी।

अपने प्रकृत विषय की ओर आने के पहले हम एक बात और कहदेना चाहते हैं। टी० विलियम्स महाशय को सदा याद रखना चाहिए कि उनकी बायबल क्या सिखलाती है। अपने भाई पर केवल उसे ही तीर फेंकने चाहिएं जो आप अपाप हो। विलियम्स महाशय! पहले अपनी बायबल में से घृणोत्पादक असंगतियों और घोरताओं, और इसकी कुत्सित और घातुक शिक्षा को दूर करके अपने आपको और अपने प्रभु को निष्पाप कर लीजिए फिर वेद के सिद्धान्तों पर आक्रमण करने के लिए सिर उठाइए। बायबल के वायुमण्डल में रहने के कारण बीस वर्ष तक संस्कृत का धैर्य्यपूर्वक अध्ययन करने पर भी, आप सिद्धान्तों को समझने के ऐसे ही अयोग्य हैं जैसाकि ग्रामर स्कूल में पढ़ने वाला एक छोटा लड़का यूनानी या इब्रानी भाषा को समझने में असमर्थ होता है। अब हम प्रकृत विषय की ओर आते हैं।

ऋग्वेद मण्डल १०, सूक्त १०, मंत्र १० का जो प्रमाण स्वामी जी ने दिया है उसके विषय में हमारे मान्य मिश्नरी कहते हैं—"महाशय! क्या आपको मालूम नहीं कि ऋग्वेद मण्डल १०, सूक्त १०, मंत्र १० का जो भाग दयानन्द उद्धृत करते हैं उसमें बोलने वाला भाई है और वह स्त्री जिस से वह बात करता है उसकी बहिन है!!! बोलने वाला यम है और वह स्त्री जिस से वह बात करता है यमी उसकी बहिन है—न केवल उसकी बहिन ही नहीं बल्कि उसकी जौड़िया बहिन है।" उन्नीसवीं शताब्दि में पादरी—रत्न, टी० विलियम्स, को यह बताने के लिए कि यम और यमी जौड़िया भाई और बहिन थे, एक विशेष ईश्वरीय ज्ञान का प्रयोजन था। टी० विलियम्स के प्रत्यादेश ईश्वरीय वाक्य होने का प्रमाण तो हमें शनैः शनैः मिलेगा, पर उनके इस व्यक्तिगत ईश्वरीय ज्ञान पर अड़ने का कुटिल अभिप्राय सपष्ट और विशुद्ध ईसाईयों का सा है। गुलाब के फूल के नीचे बैठे हुए सांप की तरह, वे अपनी-आप-में-भूले-हुए हिन्दुओं को अपने झूठी खुशामद से भरे हुए, व्यंजनामय वाक्य सुना रहे हैं. ताकि वे आर्य्यों से चिढ़ कर सांझे काम में उनसे मिल जाएँ। वे धोके से यह प्रकट करते हैं कि मंत्र का अर्थ यह है कि यमी अपने भाई यम से विवाह की प्रार्थना करती है और यम इनकार करता है, इस लिए वेद नियोग की आज्ञा नहीं देते। पर यह सब तो छल है, इसमें गुप्त [वक्रोक्ति यह है कि हिन्दुओं के पवित्र और पूज्य पूर्व जो, प्राचीन आर्यों, पुरातन

वैदिक, ऋषियों में भी ऐसी भ्रष्टता थी कि एक बहिन अपने जौड़िये भाई से विवाह की प्रार्थना करने का साहस कर सकती थी। पर वर्तमान पड़ताल के सामने ऐसा दम्भ ठैहर न सकेगा, और न ही टी० विलियम्स महाशय उस पदवी का अभिमान कर सकेंगे जो कि केवल परमात्मा को ही प्राप्त है। टी० विलियम्स का प्रगल्भ कटाक्ष यह है—"मैं पूर्ण निश्चय से कहता हूँ कि दयानन्द जानते थे कि बोलने वाला यम है, और वह अपनी जौड़िया बहिन यमी से बात करता है। अतएव वे कितने भीषण असत्य के अपराधी हैं।" बेचारे विलियम्स! क्या तुम्हारा यह निश्चय एक अत्यंत भीषण असत्य नहीं, भीषण इस लिए कि तुम एक ऐसे महापुरुष के विरुद्ध झूठ बोलते हो जिसका नैतिक आचार आदर्श तुम्हारे क्राइस्ट से कहीं बढ़ कर है। (इस विषय पर देखो अखबार थीयोसाफिस्ट)।

अपनी प्रतिज्ञा की पुष्टि में टी० विलियम्स निरुक्त ६, ५, ५ का प्रमाण देते हैं, और मूल को भूल कर एक कृत्रिम भाष्य की शरण लेते हैं, परन्तु फिर कुछ निद्रा से उठकर नि०क ११, ११, १२ पर आते हैं और "यमी यमं चकमे तां प्रत्याचचक्ष इत को पेश करते हैं," जिसका अर्थ, टी० विलियम्स के अनुसार, यह है कि "यमी ने यम से संभोग करना चाहा, उसने इनकार कर दिया।" अब टी० विलियम्स की यह सुनिश्चित प्रतिज्ञा की यम और यमी भाई और बहिन हैं कहां है? बेचारे विलियम्स साहब केवल यह उत्तर दे सकते हैं "यास्क का टीकाकार कहता है कि कोई ग्रन्थकार अपने टीकाकार के कथन के लिए जिम्मेदार नहीं हो सकता", यास्क का भाष्यकार घोर विपत्ति में पड़ा है। मान लिया कि यास्क का निरुक्त एक वेदाङ्ग है, और वेदों पर पूरा पूरा प्रमाण है, फिर भी हमें निश्चय है कि कोई मनुष्य ऐसा पागल न होगा जो, टी० विलियम्स साहब की तरह, यह विश्वास कर लेगा कि क्योंकि निरुक्त एक वेदाङ्ग है इस लिए उसकी टीका भी वेदाङ्ग है क्रोव ईसाई तरक !!!

अब वे कात्यायन की ओर आते हैं। उसके शब्द हैं—वैवस्वानयोर यम यम्योः सम्वादः"। अब संस्कृत के निर्भ्रान्त प्रमाण, विद्वद्वर टी० विलियम्स, 'वैवस्वतयोर' का अर्थ 'वैवस्वतका पुत्र और पुत्री' करते हैं; और इस प्रकार निर्भ्रान्त रूप से यह सिद्ध करते हैं कि सूक्त जौड़िया भाई और बहिन में कथोपकथन है। पर निरुक्त अध्याय ७, खण्ड २६ कहता है—"विवस्वत आदित्याद्विवस्वान्विवासनवान् भेरितवतः परागताद्वा" जिस का अर्थ यह है कि वैवस्वत सूर्य का नाम है। फिर निरुक्त १२, १० में लिखा है—"आदित्याद् यमौ मिथुनौ छनयाञ्चकार" और निरुक्त १२, ११ में "रात्रिरादित्यस्यादित्योदयेऽन्तर्धीयते" मिलता है। इसका

अर्थ यह है कि जहां वैवस्वत, अर्थात सूर्य्य के सम्बंध में यम और यमी के जोड़े का उल्लेख हो, वहां रूपक को स्पष्ट करके अर्थ यह होते हैं कि सूर्य के उदय होने से रात्रि या अन्धेरा छिप जाता है क्या वैवस्वत की सन्तान, जौड़िये भाई और बहिन यम और यमी, के साथ इसका कोई सम्बन्ध है? कदापि नहीं। इस रूपक में यमी के यम से या यम के यमी से विवाहार्थ प्रार्थना करने का कोई नाम निशान भी नहीं। पर कात्यायन, जिसके प्रमाण को मानने के लिए हम बाध्य नहीं, केवल इतना कहता है कि यम एक ऐसे मनुष्य को कहते हैं जो अपने काम को वश में रखना चाहता है, और यमी एक वैसी ही स्त्री है, और यह सूक्त रूपक की रीति से एक कथोपकथन है जिस में ऐसे स्त्री पुरुषों के कर्तव्य का वर्णन है।

तीसरे, टी० विलियम्स साहब स्वयं मंत्रों की तरफ आते हैं। वह यम और यमी को छः चार गिन कर और तीन तीन बार प्रत्येक को किसी विशेष व्यक्तियों का नाम बतलाकर फूले नहीं समाते परन्तु उनके विशेष व्यक्तियों के नाम होने में जो प्रमाण वे देते हैं वे बड़े ही अद्भुत हैं। उनकी पहली युक्ति तो यह है कि १३ वें मंत्र में यम, और १४ वें मंत्र में यमी सम्बोधनपद में आये हैं। क्या विलियम्स साहब को उनके "वेदों में मूर्ति पूजन" वाले लेख पर हमारी दोषालोचना को पढ़ने के बाद ऐसी तर्क करते लज्जा नहीं आती? हम आलोचना के गीत १३, १६ से उदाहरण देते हैं—"हे उत्तरीय पवन! जाग, और दक्षिण को चल"। यहां पवन सम्बोधन पद में है। क्या टी० विलियम्स की बायबलीय तर्क विश्वास करेगी कि पवन किसी विशेश व्यक्ति का नाम है? और लीजिए, पैगम्बर ईज़ाइयाह (Isaiah) की पुस्तक १–२ में लिखा है—"हे आकाश और पृथ्वी! ध्यान देकर सुनो"। क्या "आकाश" और "पृथ्वी" यहां विशेष व्यक्तियों के नाम हैं? फिर ईजाइयाह २१–१३ में "हे सफर करने वाली टोलियो!" आया है। क्या "टोलियां" यहां किसी व्यक्ति विशेष का नाम है? शायद विलियम साहब ने बायबल और व्याकरण केवल किसी ईसाई स्कूल में ही पढ़े हैं, अन्यथा वह बायबल में चमकने वाली प्रशंसनीय तर्क न छांटते।

टी० विलियम्स साहब अब "सम्बोधन पद" का "विशेशनामों" के साथ सम्बंध मालूम करते हैं। वे कहते हैं कि यम यमी को अपनी नातेदारनी (सलद्मा) के नाम से पुकारता है। क्या "सलद्मा" का अर्थ नातेदारनी है या "उसी प्रकार के गुणों वाली"?

विलियम्स कहते हैं कि "आगे चल कर चौथे मंत्र में यम कहता है कि हमारा (यम और यमी का) मूल—"नाभिः"—गंधर्व और उसकी जल-स्त्री है, और हमारा सम्बंध सगोत्रता का जामि—है।" "जल-स्त्री" एक ऐसी कल्पना है जो केवल बायबल पढ़े मस्तिष्क में ही पैदा हो सकती है, और ऐसी जल-स्त्री का

पति, गन्धर्व, भी सागरों में किसी नाविक जाति के बीच रहता होगा। इस नाविक जाति का आर्यावर्त की भूमि पर रहने वाले प्राचीन आर्यों को कुछ भी पता नहीं। टी० विलियम्स साहब में उस मानवीय माहात्म्य और गर्व का एक कण भी नहीं जो मनुष्य को दृढ़ रखता है। यम और यमी वैवस्वत की सन्तान हैं या गन्धर्व और उसकी जल-स्त्री की? विलियम्स साहब को चाहिये था कि पहले अपने मन में इस प्रश्न का उत्तर सोच लेते फिर लेख छपाने दौड़ते।

वे फिर कहते हैं—"आठवें मंत्र में, यमी कहती है कि त्वष्टृ ने हमें गर्भ में पति और पत्नि—दम्पती—बनाया है।" यह यम और यमी को जौड़िया भाई बहिन प्रमाणित करने के स्थान में उन्हें पति और पत्नि सिद्ध करता है। यदि हम ऐतिहासिक भाषासरणि को स्वीकार करें तो वे क़ानूनी तौर पर या केवल रीति से ही स्त्री और पुरुष न थे, परन्तु प्रकृति और गुणों से भी स्वभावतः इस सम्बन्ध की ओर झुके हुए थे। त्वष्टृ के उनको गर्भ में ही पति और पत्नि बनाने का केवल यही युक्तिसंगत अर्थ हो सकता है। नहीं तो क्या हम यह समझलें कि विज्ञ टी० विलियम्स साहब अज्ञानतः अपने ही पक्ष के विरुद्ध आपत्तियों का ढेर इकट्ठा कर रहे हैं? या अगर टी० विलियम्स सच्चे हैं तो प्रश्न होता है कि इन तीनों बातों में कौन सी सच्ची है? क्या यम और यमी वैवस्वत की सन्तान थे, या गन्धर्व और उसकी जल-पत्नि की, या वे त्वष्टृ (जो पुरुष थे) के गर्भ में पैदा हुए थे।

फिर नवें मन्त्र का प्रमाण देकर टी० विलियम्स कहते हैं कि "आकाश और पृथ्वी पर जोड़े—'मिथुना'—अर्थात् यमज परस्पर जुड़े हुए हैं।" यहां पर यह मालूम नहीं होता कि जिस "मिथुना" शब्द का अर्थ जोड़ा है, टी० विलियम्स साहब ने उसका अर्थ जौड़िया (यमज) कैसे कर दिया। क्या जोड़ों (नर और नारी) का विवाह होने से यह सिद्ध हो जाता है कि जौड़िया भाई बहनों का विवाह होता है।

टी० विलियम्स साहब की दसवें मन्त्र की दोषालोचना भी इससे कुछ अच्छी नहीं "यत्र जामयः कृणवन्नजामि" का अर्थ यह है कि "विवाह के सम्बन्ध से सन्तानहीन लोग सन्तान वाले हो जाते हैं", पर बीस वर्षों से संस्कृत का अध्ययन करने वाले हमारे पण्डित प्रकाण्ड (टी० विलियम्स) इसका अर्थ करते हैं कि "आज से जहू के नातेदार वह करेंगे जो उनके शोणित-सम्बन्ध के लिए अनुचित है।" अब इस स्थल पर स्वामी जी का नियोग का प्रमाण आता है जिस में यम कहता है कि "मेरे सिवा किसी और पति की कामना कर।"

हम ११वें और १२वें मन्त्र को छोड़ देते हैं क्योंकि भाई और बहिन का सम्बन्ध जो टी० विलियम्स यम और यमी के बीच प्रतिष्ठित करना चाहते हैं, उनके अपने ही अनुवादों से पहले ही झूठा साबित किया जा चुका है।

अब, महाशय ! यदि कोई इतने पर भी दयानन्द के किए हुए अर्थों के सच्चा होने में सन्देह करे तो उसे सिवाय पागल (भौंदू) के और क्या कहा जा सकता है। मैंने दिखला दिया है कि यह रूपकात्मक कथोपकथन जौड़िया भाई बहिनों के बीच नहीं, और स्वामी जी के अर्थ ठीक हैं। दयानन्द का निन्दक, टी० विलियम्स, अपने आपको बीस वर्षों तक संस्कृत पढ़ने वाला पण्डित कहता है !! टी० विलियम्स और उसके ईश्वर को जान बूझकर झूठ बोलने, बायबल का बहुत कम आदर करने, और इस प्रकार परमेश्वर पर अत्यन्त अश्लील दोषारोपण करने का अपराधी सिद्ध करने के बाद मैं यह कहने के लिए सर्वथा उद्यत हूं कि निस्सन्देह टी० विलियम्स अपने समय में बायबल का सब से भयानक शत्रु है। पर वेद ऐसे वर्षों-के-से आक्रमणों से बहुत ऊपर हैं।